Newspaper Clips
October 29-30, 2016

October 30

Hindustan ND 30.10.2016 P-14

आईआईटी में पांच फीसदी सीटें बढ़ेंगी

पटना | विकास कुमार

देशभर के विभिन्न इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) में नए सत्र यानी 2017 से 528 सीटें बढ़ेंगी। ज्वाइंट एडमिशन बोर्ड (जैब) की बैठक में यह निर्णय लिया गया है।

बैठक में अगले एकेडमिक सत्र से कुल छात्रों की संख्या में पांच प्रतिशत सीटों का इजाफा करने की सहमति बनी है। बैठक में विभिन्न आईआईटी के निदेशक मौजूद थे। हर साल विदेशी छात्रों के लिए 10 प्रतिशत सीटें बढ़ाने का फैसला लिया गया है। नए सत्र से सीटें बढ़ने के कारण ही जेईई एडवांस में दो

लाख 20 हजार अभ्यर्थियों को शामिल कराने का फैसला लिया गया है। अबतक जेईई एडवांस में दो लाख अभ्यर्थी ही शामिल होते थे। इस बार 20 हजारअधिक छात्रों को जेईई एडवांस में शामिल होने का मौका मिलेगा।

मंजूरी मिलते ही बढ़ेंगी सीटें : मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार को यह प्रस्ताव भेज दिया गया है। मंत्रालय की स्वीकृति मिलते ही अगले साल से 10,572 सीटों को बढ़ाकर 11,100 किया जाएगा। बैठक में जेईई आयोजन समिति के चेयरमैन आईआईटी मद्रास के प्रेम बिष्ट भी मौजूद थे। ये बढ़ी हुई सीटें सभी 23 आईआईटी में होंगी। बैठक में नए आईआईटी के निदेशकों ने

सीटें बढ़ाने पर सहमति दी है। हालांकि कुछ पुराने आईआईटी के निदेशक तुरंत प्रभाव से अधिक छात्रों को पढ़ाने के लिए तैयार नहीं है। पुराने आईआईटी के निदेशकों का कहना है कि अगर यह प्रस्ताव स्वीकार होता है तो हमें सरकारी फंडिंग की आवश्यकता होगी। ताकि अधिक क्लासरूम, लेबोरेटरी, होस्टल आदि तैयार किए जा सकें। नए आईआईटी में इसकी जरूरत नहीं होगी।

सीटें बढ़ाने की पहल आईआईटी काउंसिल के फैसले के बाद किया गया है। अगस्त-16 में हुई आईआईटी काउंसिल की बैठक में 2020 तक सभी आईआईटी में सीटों की संख्या बढ़ाकर एक लाख करना का फैसला लिया है।

Rajasthan Patrika ND 30.10.2016 P-3

आत्मनिर्भरता के लिए

केंद्र सरकार ने कहा आईआईटी, आईआईएम कमाएं ज्यादा पैसा

राजस्व वृद्धि की संभावनाएं ढूंढे

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

नई दिल्ली. केंद्र सरकार ने वित्तीय सहायता प्राप्त आईआईटी और आईआईएम जैसे देश के प्रतिष्ठित संस्थानों से कहा कि काम करने के लिए पैसों की अपनी अलग अहमियत होती है। इसलिए उन संभावनाओं की तलाश करें जिससे विभागीय और संस्थागत आय में वृद्धि को बल मिले।

संस्थानों के प्रबंधकों को आत्मनिर्भर प्राप्त करने के लिए जरूरी पहल करना चाहिए। वित्त मंत्रालय ने सभी सरकारी मंत्रालयों और विभागों को लिखित आदेश दिया है कि वे समय-समय पर समीक्षा करें कि किन-किन मदों में राजस्व का इजाफा हो सकता है। केंद्र ने आईआईटी, आईआईएम, और एनएसडी जैसे संस्थानों से उन संभावनाओं का पता लगाने को कहा है कि जिन शैक्षिक व प्रोफेशनल सेवाएं दे रहे हैं उनमें से किन-किन मदों में फीस बढ़ोतरी संभव है।

क्या चाहते हैं वित्त मंत्री

सहायता प्राप्त स्वायत संस्थान आत्मनिर्भर बनें

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को दें बढ़ावा

यूजर चार्जेज की समीक्षा करें।

जरूरी हो तो फीस में बढ़ोतरी करें

इन तरीकों से बढ़ेगी संस्थानों की आय

सेवा शुल्क की समय-समय पर हो समीक्षा

इसका मकसद यह सुनिश्चित करना है कि सभी शैक्षिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संस्थान आर्थिक स्थिति को लेकर समय-समय पर समीक्षा करें और सेवा शुल्क में बढ़ोतरी पर जोर दें ताकि उनकी खुद की वित्तीय आत्मनिर्भरता बन सके। वित्त सचिव अशोक लवासा ने कहा कि बेहतर सेवा देने वाले संस्थानों का निर्माण लोगों के पैसों से होता है। जरूरी है कि वो राजस्व के संभावित स्रोतों की भी तलाश करें।

फीस बढ़ाएं या एंट्री चार्ज लगाएं

देश के प्रतिष्ठित संस्थान आईआईटी और आईआईएम जैसे सहायता प्राप्त संस्थानों को चाहिए कि वे नये व्यावसायिक पाठ्यक्रम शुरू करें। इनमें स्टूडेंट फीस के मद में शामिल सेवा शुल्क बढ़ाएं। अगर कैंपस में सांस्कृतिक शाखा है और संग्रहलय है तो प्रवेश के लिए टिकट की व्यवस्था करें। मंत्रालयों के पास ऐसे कई स्रोत हैं जिससे किराया या टोल टैक्स के माध्यम से राजस्व में बढ़ोतरी संभव है।

संस्थानों के रखरखाव के लिए यह कदम जरूरी

फीस वृद्धि राजनीतिक रूप से संवेदनशील मुद्दा

सभी तक शिक्षा की पहुंच सुनिश्चित करने के लिहाज से छात्रों की फीस में बढ़ोतरी राजनीतिक रूप से संवेदनशील मामला हो सकता है, लेकिन ऐतिहासिक धरोहर, ईमारत, संग्रहालयों के फीस में बढ़ोतरी कर बेहतर प्रबंधन व रखरखाव को बढ़ावा दिया जा सकता है।

> कई ऐसे शिक्षण व सांस्कृतिक संस्थान हैं जो अपनी आधारभूत सुविधाओं का लाभ उठाते हुए आय में बढ़ोतरी कर पाने में सक्षम हुए हैं। इसलिए जो संस्थान ऐसा नहीं कर रहे हैं, उन्हें इस तरह के कदम उठाने चाहिए, ताकि ऐसे संस्थान आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ सके।

IIT-Kharagpur tech push to help visually impaired kids read Bangla classics

http://timesofindia.indiatimes.com/city/kolkata/IIT-Kharagpur-tech-push-to-help-visually-impaired-kids-read-Bangla-classics/articleshow/55147012.cms

KOLKATA: Children with blindness will soon be able to savour classics of Bengali literature, thanks to a combined effort of three top institutes of higher education: IIT-Kharagpur, Jadavpur University (JU) and Indian Statistical Institute (ISI). The computer science and technology department of IIT-Kgp has devised a software that is helping render some of these evergreen texts into braille, the first time this is being done with an Indian language.

Faculty members of the three premier institutes have come together to form a Society for Natural Language Technology and Research (SNLTR), which has taken up the mammoth task of translating major works of Bengali literature into braille. This is part of an initiative to bring in tech intervention to help persons with disabilities. At the moment, efforts are on to introduce tools to help persons with blindness and patients of cerebral palsy get integrated into the mainstream. The next step is to address the challenges of dyslexia, said a source.

Software developed by IIT-Kgp for the two kinds of challenges have been handed over to SNLTR so that tools could be developed. SNLTR is housed in the Webel Building of Salt Lake's Sector V, where scores of researchers are working to convert timeless classics. Some, like 'Tuntunir Boi', 'Thakumar Jhuli', some plays of Tagore like 'Raktakarabi', his short story collection 'Galpaguchchha', Bibhutibhushan Bandyopadhyay's 'Aranyak' and 'Chander Pahar' have been converted to braille and are ready for distribution.

SNLTR has also been tasked by the state government to prepare braille textbooks for Madhyamik from the next academic session. SNLTR's honorary director Anupam Basu, who is a senior computer science teacher at IIT-Kgp, said: "We have already done language and literature books, geography, history and maths text books. We are expecting more. In case of geometry and geography maps, for example, we have not only depended on the software that IIT-Kgp has prepared but a new technology developed at IIT-Delhi, where we are able to emboss shapes on a special kind of paper that punctuates other pages of the braille textbook."

Sanjog, the software that has been developed for cerebral palsy patients, has been used to create a completely new access mechanism and apps that can be used by those with as much as 65% speech impairment. "Hundreds of icons have been developed that can be clicked on through specially designed access switches to help the patient write letters, jot down notes, store reference work, and more," Basu explained.

A take-off from this is the Akashvani app, that can be downloaded on smartphones and tablets. The app contains hundreds of options related to one's daily activities. Cerebral palsy patients with unclear speech can carry the tab along to help him/her communicate with others by pressing on the right icon. The tools have been given to the Indian Institute of Cerebral Palsy to see how effective these are.

IITK to award faculty, alumni

http://paper.hindustantimes.com/epaper/viewer.aspx

LUCKNOW: The Indian Institute of Technology Kanpur announced a number of awards for its faculty and old students who have contributed significantly to the institute. The award function will be held at IITKanpur on November 2. The Institute Fellow Award – 2015 will be given to three of the faculty: Prof RN Biswas, Prof Asok Kumar Mallik and Prof D Balasubramanian. The Institute Fellow Award was instituted by the Board of Governors of the Institute in 2005 to recognize individuals who have made outstanding contributions to IITKanpur . Nominees for the award may be the faculty member of IIT Kanpur and its alumni as well as other individuals from the industry, or society in general, who may have contributed to the IITK in a noteworthy manner. A total of 17 awards have been given since its introduction. Prof Sumit Ganguly, department of computer science & engineering will be the recipient of the Gopal Das Bhandari Distinguished Teacher Award 2016. The Gopal Das Bhandari Distinguished Teacher Award was instituted in 2006 based on a donation of US$ 25,000 made by Anil Bhandari, an alumnus of IITKanpur . It is given annually to recognize and honour an outstanding teacher of the institute. Besides, Distinguished Alumnus Award – 2016 will be given to Vishnu Agrawal (BT/ EE/1966) – entrepreneurship, Arvind Pradhan (BT/ME/1974) – entrepreneurship, RS Sharma (MSC2/Maths/ 1977) – management excellence, Prabhat Singh (BT/CE/1980) – professional excellence, Udai B Desai (BT/ EE/1974) – academic excellence, Anurag Kumar (BT/EE/1977) academic excellence and Sanjeev K Lele (BT/ME/1980) academic excellence. The Distinguished Alumnus Award–2016 was introduced in 1989 after the approval of the Board of Governors of the Institute in 1987. This award is the highest given to its alumnus/ alumna in recognition of achievement of exceptional merit in various areas. A total of 95 awards have been given since its introduction. Lastly, Dr KM Abraham (MT, IME, 1989, IIT Kanpur) will be the recipient of the Satyendra K Dubey Award for the year 2016. The Satyendra K Dubey Memorial Award was instituted by the Board of Governors of the Institute in 2005 in the memory of late Satyendra K Dubey in view of his exemplary life and supreme sacrifice. Satyendra K Dubey was an alumnus of 1994, B. Tech (Civil Engineering). The award is given to alumnus of any IIT , who displays highest professional integrity for upholding human values. A total of 9 awards have been given since its introduction.

October 29

Pioneer ND 29.10.2016 P-4

IIT-Kharagpur to celebrate Diwali eco-friendly way!

PNS ■ KHARAGPUR

On the day of Diwali, millions of tones of crackers will be burst, releasing thousands of tones of poisonous gases into the environment. Diwali is becoming a festival more of smoke, dust and noise than light. Moreover, imports of Chinese crackers and diyas take toll on domestic Indian market. Going against the trend, students of IIT Kharagpur, India's largest and the oldest IIT, is leaving no stone unturned to make Diwali eco-friendly and "India-genic".

The students here celebrate Diwali in a unique way entitled "Illumination" or more dearly called "Illu", having its inception past 4 decades. The students erect gigantic bamboo structure with diyas projecting a theme and reflecting the true spirit of Diwali. The raw materials for creation of these beautiful structures are purely indigenous, bought from local vendors.

The oil used in the diyas are well experimented with varying combination to sustain the diyas for a long time with minimum smoke production. With the astounding combination of colours, light and obviously the creativity of the students, Rangoli adds the sparkle to the festival. The colours used are indigenous and non-toxic.

Deccan Herald ND 29.10.2016 P-2

Purifiers to cleanse air at major traffic intersections

Move just a symptomatic treatment, say experts

NEW DELHI: The Delhi government on Friday said it will instal air cleaning system which will include air purifiers at five major traffic intersections and a mist fountain in order to curb air pollution during the coming winter months.

However, experts seemed skeptical of the idea, calling it only a "symptomatic treatment".

The technology has been designed by National Environmental Engineering Research Institute (NEERI), which is a Central government institute and Indian Institute of Technology (IIT) Bombay and will be set up in one and a half months, according to Delhi Health Minister Satyendar Jain.

The three-tier air treatment system will include a wind purification unit, virtual chimney, and mist fountains/generators. According to Jain, the unit has potential to reduce carbon monoxide and particulate emission by 40 to 60 per cent in 20-30 metre radius during peak hours of traffic.

While Jain said that the technology will be installed on a pilot basis as air purifiers for tackling outdoor pollution has not been seen till now, experts said that the technology won't make much difference at open

The government plans to instal air cleaning system which will include air purifiers at 5 major traffic intersections. FILE

spaces as air movement is unpredictable.

"The technology won't be able to purify all the air and won't do much good. The indoor purifiers are based on the capacity of a particular room and how much air can be sucked by the machine, passed through various filters and then pushed out. But at outdoor spaces, it won't make any difference. You might have good air in surroundings of 10-15 metres but not more than that. It is just a symptomatic treatment and not a conclusive one," said environment lawyer Aditya N Prasad.

Ecologist and Professor-Emeritus, Centre for Environmental Management of Degraded Ecosystems, Prof C R Babu said, "the technology will only work at locations where

traffic load and the emission level is very low. Air can only be purified by natural process like greenry at road sides".

The five locations which have been identified are Sarai Kale Khan, ITO, Anand Vihar, Kashmere Gate, and the last one will be either IIT Delhi or AIIMS.

"The mist fountain will pour recycled water and suck dust particles, especially PM 2.5. It will be installed at one of the five intersections or road dividers and footpaths could be used for washing roads using mist generators and fountains. The virtual chimneys will cause dilution of polluted air by natural mixing with surrounding air, almost like a big fan. They can be set up at important intersections," said an official.
DH News Service

Anna univ, IIT-M to sign MoU for student exchange

http://timesofindia.indiatimes.com/city/chennai/Anna-univ-IIT-M-to-sign-MoU-for-student-exchange/articleshow/55124091.cms

Chennai: Now, students and teachers from Anna University can literally walk across the road to IIT-Madras and vice versa - the two institutions are gearing up to sign a Memorandum of Understanding (MoU) which will facilitate faculty and student exchange across their campuses.

The MoU has been approved by the senate and the syndicate. It is likely to be signed in the first week of November, says officials of Anna University.

"It is basically an academic co-operation where faculty and students are empowered to collaborate and co-operate on education and research. But this will particularly benefit the research aspect where faculty members can also work on combined proposals," said Jagadeesh Kumar, dean of academic course, IIT-Madras. "It all started with some faculty members across the two campuses wanting to work together," he added.

IIT students too can benefit as certain departments which are not on their campus may be accessible in Anna University. "Students coming to IIT will certainly benefit from the exposure. On the other hand, certain disciplines like printing technology and bio-informatics departments that are there in Anna University could be accessed by our students," said Jagadeesh Kumar.

Deccan Herald ND 29.10.2016 P-17

IIM-A students' project SMILE Centre to teach underprivileged

FILE PHOTO

Ahmedabad: The Indian Institute of Management, Ahmedabad (IIM-A), on Thursday, inaugurated its community outreach project 'SMILE Centre.' Through this project, students and faculty members of the premiere institute will impart formal as well as informal education to children of under-privileged families.

The SMILE (Student Mediated Initiative for Learning to Excel) Centre operates from an empty space under a flyover in front of the institute. The centre was inaugurated by Chairman of Wagh Bakri Group Piyush Desai in the presence of IIM-A Director Ashish Nanda and several other faculty members and students. The city-based Wagh Bakri group has provided financial support while Ahmedabad Municipal Corporation has alloted the space to start the centre. As of now, 89 students of Class VIII to Class XII, both Commerce and Arts streams are enrolled for the current academic year, said IIM-A Professor Rakesh Basant, Dean (Alumni and External Relations) and Faculty Coordinator for SMILE project.

"These 89 students of under-privileged families, including 35 girls, are from urban slum areas of different parts of city. Our aim is to provide them education which would help them in their regular studies. In addition, we will also teach them English communication and computer skills," Basant said.

38 students of IIM-A along with seven faculty members and three research associates have agreed to give their time for this project, he added. "This Centre is more than a tuition class, as our students and faculty members would also provide them guidance about career opportunities, personality development and other skills which would prove beneficial for their overall development. We do not charge anything from the families of these kids," the professor said. **—PTI**